HINDI CORE 302

2

Space for writing Question Number

Space for writing Question Number

खण्ड-क

1.

i) D) रज और तम

ii) B) जागने की

iii) C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

iv) जागृति → जीवन और अभ्युदय
निद्रा → पतन और ह्रास

v) 'जागना' और 'सोना' दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे के सहारे पर हैं। जीवन का मुख्य लक्षण जागना होता है और सोना अर्थात् - विश्राम केवल उसका सहायक है। एक सुखी जीवन के लिए दोनों ही क्रियाएँ अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती हैं।

4

Space for writing Question Number

(vi) लेखक के अनुसार 'किसी राष्ट्र की जागृति' से अभिप्राय उस राष्ट्र में रहने वाले व्यक्तियों के जागृत होकर ध्यानपूर्वक कार्य करने से है। ऐसी स्थिति में ही समाज और राष्ट्र की उन्नति संभव है।

(vii) निद्रा को तमोगुण की प्रधानता से जोड़ा गया है। इसके पीछे का कारण यह है कि निद्रा को जागने की तुलना में कम महत्त्वपूर्ण माना गया है और व्यक्ति जितना कम सोता है, उतना ही जागरूक रहता है।

2.

i) C) भूमि पर सबका समान अधिकार

ii) ~~A) व्यक्तिगत अधिकार~~ D) सामूहिक स्वामित्व

iii) B) वनों की अंधाधुंध कटाई

Space for writing Question Number

iv.) यदि 'भूमि यह मेरी है' की भावना समाज में व्याप्त नहीं होगी तो दुनिया की संरचना भाईचारे, प्रेम, मानवता, सहानुभूति के साथ होगी जिसमें हर व्यक्ति संतुष्ठ रहेगा।

v.) कविता के अनुसार 'दुनिया का सबसे बड़ा अधम' वह व्यक्ति था जिसने भूमि पर अपना अधिकार जताने की कोशिश की। इसके साथ ही अन्य जीवों के व्यक्तिगत अधिकारों को छिनने की कोशिश की।
कविता में ऐसे व्यक्ति को असत्य, अन्याय, झूठ का अवतार माना गया है।

vi.) प्रस्तुत पंक्ति में लालची, अभिमानी लोगों पर व्यंग्य किया गया है जो अपने लोभ-लालच के वश में आकर प्रकृति को नुकसान पहुँचा रहे हैं और मासुम, गरीब लोगों का शोषण कर रहे हैं। इन लोगों ने अधिक से अधिक धन कमाने की दौड़ में भूमि पर अधिकार जमा लिया है।

6

Space for writing Question Number

खण्ड-ख

3.

(iii) मोबाइल में कैद जीवन

किसने सोचा होगा, जिस मोबाइल का आविष्कार सदियों पहले संपर्क और बात-चीत करने के भाव से हुआ था, आज वहीं सबसे बड़ा अभिशाप बन जाएगा। आज के आधुनिक समय में बच्चों से लेकर बुजुर्ग, सभी लोग मोबाइल, इंटरनेट से ग्रस्त हो चुके हैं। इन सभी में से सबसे अधिक प्रभावित होने वाला वर्ग है → युवा वर्ग।

आज का युवा वर्ग मोबाइल का इतना आदि हो चुका है कि हर चौबीसो घंटों उन्हें मोबाइल अपने साथ चाहिए। उनका जीवन इस मोबाइल तक ही सीमित हो चुका है। जिस मोबाइल का सदुपयोग होना चाहिए, आज उसका दुरूपयोग अधिक हो रहा है। इसके कारण सामाजिक दूरी बढ़ रही है; व्यक्ति अपने परिवारजनों, मित्रजनों आदि के साथ समय बिताना पसंद नहीं करता। वे मोबाइल के आगे कुछ और करने की सोच और क्षमता का विकास नहीं कर पाते। सोशल मीडिया पर प्रसारित

होने वाले कन्टेट से वे अत्यधिक प्रभावित हो जाते हैं और उसकी लत लगा लेते हैं। उन्हें इसपें संचारित होने वाले दुष्प्रचार, गंदगी, अश्लीलता भरे कार्यक्रम में आनंदानुभूति मिलने लगती है। कई बार तो इसके कारण उन्हें साइबर अपराध का भी शिकार बनना पड़ता है। किंतु फिर भी वे इसके दुष्प्रभावों को नजरअंदाज करके मोबाइल में ही व्यस्त रहते हैं।

"मोबाइल को एक हथियार की तरह नहीं, औजार के तौर पर इस्तेमाल करो, जो आपके जीवन को कठिन नहीं, सरल बनाए।"

५.

i) रेडियो ध्वनि, स्वर व शब्दों का खेल है :-

- रेडियो एक श्रव्य माध्यम है।
- इसमें दृश्य और विजुअल न होकर, संवादो और ध्वनि प्रभावों की प्रधानता और महत्ता होती है।

8

Space for writing Question Number

- इसमें पात्रों की चारीत्रिक विशेषताएँ, उनसे संबंधित अन्य जानकारियाँ, पात्रों के द्वंद्व, उद्देश्य आदि संवादो के माध्यम से ही उजागर होती है।
- इसीलिए रेडियो में संवादो को सरल, सहज और आम बोल चाल की भाषा में व्यक्त किया जाता है।

iii) नेट साउंड से अभिप्राय है :-

- नेट साउंड यानी प्राकृतिक आवाजें – जो किसी शूट में खुद-ब-खुद चली आती है।
- जैसे- गाड़ियों का गुजरना, चिड़ियों का चहचहाना, कारखानों में मशीनों की आवाज आदि।
- अगर रिपोर्टर किसी आंदोलन वाली जगह की खबर ले रहा है तो उसे वहाँ लगते नारों को भी दिखाना पड़ेगा जो उस खबर का पुष्टिकरण करते हैं।

ii) स्क्रीन-विजुअल से अभिप्राय है :-

- जब घटना से संबंधित दृश्य प्राप्त हो जाते हैं, तब उन दृश्यों के आधार पर सूचनाएँ बनाई जाती हैं।

Space for writing Question Number

- इस समाचार की शुरूआत प्रारंभिक सूचना से होती हैं और बाद में स्क्रीन पर स्कर की जगह संबंधित दृश्यों को दिखाया जाता हैं।

iv.) समाचार लेखन की मानक शैली हैं → उल्टा पिरामिड शैली।

- इस शैली के अंतर्गत समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों को शुरूआत की 2-3 पंक्तियों में लिखा जाता हैं।
- बाकी के समाचार को घटते हुए महत्वक्रम में लिखा जाता हैं।
- शुरू की पंक्तियाँ, तीन या चार ककारों पर आधारित होती हैं। (कौन, कब, क्या, कहाँ)
- इस शैली में क्लाइमक्स अंत में न होकर, शुरुआत में होता हैं।
- इसे तीन भागों में विभाजित किया जाता हैं :- इंट्रो। लीड़ , बॉडी और समापन।

10

Space for writing Question Number

5.

(ii) कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :-

- कथानक के अनुसार दृश्य दिखाने चाहिए।
- नाटक के दृश्य बनाने से पहले उसका खाका तैयार कर लेना चाहिए।
- नाटक के संवादों का कहानी के मूल संवादों के साथ मेल होना चाहिए।
- संवाद अधिक लंबे और जटिल नहीं होने चाहिए।
- संवाद सरल, सहज और आम बोल-चाल की भाषा में होने चाहिए।
- इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए की जानकारियाँ, सूचनाएँ, घटनाएँ दोहराई न गई हो।
- कहानी के संवादों को नाटकीय रूपांतरण में एक निश्चित स्थान मिलना चाहिए।

Space for writing Question Number

iii) रेडियो नाटकों में संवादो पर विशेष ध्यान देने के कारण निम्नलिखित हैं :-

- रेडियो एक पूरी तरह से श्रव्य माध्यम है।
- इसमें संवादो और ध्वनि प्रभावों की प्रधानता होती है, न कि दृश्यों या पात्रों की भाव-भंगिमाओं की।
- संवादो के माध्यम से ही रेडियो नाटक का उद्देश्य स्पष्ट हो पाता है।
- संवादो के माध्यम से ही पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ उजागर हो पाती हैं।
- पात्रों से संबंधित अन्य जानकारियाँ भी संवादो के द्वारा ही मिलती हैं।
- श्रोतागण को संदेश देने के लिए भी संवादो का प्रयोग होता हैं।
- इसलिए संवाद सरल, सहज, प्रभावशाली भाषा में होने चाहिए तथा लंबे व जटिल नहीं होने चाहिए।

12

Space for writing Question Number

खण्ड-ग

6.

i.) D) यह सृजन कर्म के शाश्वत भाव की कविता है।

ii.) C) भावनाओं का आवेग

iii.) B) विचारों के

iv.) B) कृषि - कर्म से

v.) C) साहित्य कालजयी

7.

i) फूलों के खिलने का कविता से गहरा संबंध है। जिस प्रकार फूल खिलकर अपनी सुगंध चारों ओर फैलाता है तथा लोगों को मंत्रमुग्ध कर लेता है, ठीक उसी प्रकार कविता में भी प्रसन्नता, खिलावट, खिल-खिलाहट आदि अनिवार्य

Space for writing Question Number

गुण हैं। कवि अपनी कविता को फूलों की भाँति आनंदमय बनाकर सभी पाठकों और श्रोताओं में बाँटता है। अर्थात् कहने का भाव यह है कि कवि की कविता भी सबको आनंद की प्राप्ति कराती है।

iii) कवितावली में तुलसीदास ने अपने समाज में प्रचलित बुराइयों का सुंदर और जीवंत चित्रण किया है। तुलसीदास के समाज में धार्मिक और सामाजिक बुराइयाँ अपनी चरम सीमा पर थी। जैसे → छुआछुत, जाति प्रथा, ऊँच-नीच आदि। उस युग के अधिकांश लोग गरीब थे और उनके व्यवसाय की स्थिति भी अच्छी नहीं थी। वे लोग अपना पेट भरने के लिए अपने बेटे - बेटियों को बेचने में भी संकोच नहीं करते थे। स्वयं तुलसीदास को निर्धन एवं अकुलीन होने का अपमान सहना पड़ा। दरिद्रता के कारण लोग धर्म - अधर्म भूलकर निकृष्टतम कार्य करने को तैयार हो जाते थे।

14

Space for writing Question Number

8.

i) मानव जीवन कष्टों से भरा हुआ है। इस संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो पूर्णत: सुखी हो अर्थात् जिसके जीवन में कोई भी कष्ट न हो। किंतु इन कष्टों को सहन करते हुए भी व्यक्ति अपने प्रेम और दिवानगी के कारण जीवन जी सकता है। यदि मन में नवीन कल्पनाएँ, कोमल भावनाएँ और उत्साह एवं उमंग से परिपूर्ण लक्ष्य सामने हो तो मस्ती से भरा वातावरण पैदा किया जा सकता है।

iii) कवि बादल का क्रांतिकारी अर्थात 'विप्लव के वीर' के रूप में आह्वान कर रहा है। छोटे पौधे और निम्न वर्ग के लोग विकास के पथ पर आगे नही बढ पाँए तथा पूंजीपती लोग, धनी लोग आदि ने इन गरीबों की जीवन शक्ति को चूस लिया है। क्रांति घटित होने से सामान्य जन को भी लाभ और उत्थान के अवसर मिल सकेंगे।

Space for writing Question Number

9.

i.) B) लोभ से बचने हेतु साधन को ही नष्ट कर देना।

ii.) C) इससे मन जड़ हो जाता है।

iii.) B) अपूर्णता के बोध से

iv.) C) मन को संयमित रखना

v.) C) कथन I और III सही हैं।

10.) भक्तिन की विशेषताएँ जिन्होंने हमें सर्वाधिक प्रभावित किया, वह निम्नलिखित है:-

• कठोर परिश्रमी

→ तीन लड़कियों को जन्म देने के कारण भक्तिन को घर और खेत- खलिहानों का सारा काम करना पड़ता था। जैसे→ कंडे थापना; मट्ठा राँधना, पोरना, कूटना ; पशुपालन आदि। उसके कठोर परिश्रमी एवं पति के प्रति सच्ची होने के कारण

16

Space for writing Question Number

उसके पति ने भी उसका सैदव साथ दिया।

- साहसी और मजबूत

→ अपने पति की मृत्यु के बाद उसने सारा काम खुद से ही सँभाला और अपने जेठ-जेठानियों का दृढकर रहकर सामाना किया। दोनो लड़कियो की शादी कराई तथा बड़े दामाद को घर जमाई बनाकर रखा।

- सेविका-धर्म

→ भक्तिन महादेवी वर्मा के प्रति अपने सेवक-धर्म में निपुण थी। वह महादेवी की भ्रमण की एकांत साथी थी। रात की निस्तब्धा में महादेवी को अकेला नहीं छोड़ती थी और काम में व्यस्त महादेवी को कभी दही का शर्बत, तो कभी तुलसी की चाय पिलाकर भूख का कष्ट नहीं उठाने देती थी। वह महादेवी के प्रति हनुमान जी की तरह समर्पित थी।

Space for writing Question Number

iii) लेखक के अनुसार उनका 'आदर्श-समाज' समता, भ्रातृता, और स्वतंत्रता पर आधारित होना चाहिए। लेखक के मत में एक आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए की कोई भी परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। सामाजिक संपर्क के निरंतर साधन और अवसर सभी को प्राप्त होने चाहिए। सार्वजनिक हितों में सबकी साझ्यदारी होनी चाहिए। लेखक ने ऐसे समाज की तुलना दूध और पानी से की है, जिसका दूसरा नाम लोकतंत्र है।
अतः ऐसे आदर्श समाज में ही सबका हित हो सकता है।

ii)

iii) शिरीष के फूलों के माध्यम से लेखक ने हमें आसपास फैले भ्रष्टाचार, घोखा-धड़ी, लूट-पाट के बीच भी अपने जीवन रस और उत्साह का बचाने की प्रेरणा देता है; जिस प्रकार शिरीष का वृक्ष आसपास फैली गर्मी, लू, तपन में भी सरस बना रहता है। साथ ही लेखक ने इन फूलों के माध्यम

से नेताओं की ओर भी संकेत किया है जो अपना पद और सत्ता छोड़ने को तैयार नहीं होते, जबतक नयी पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर न गिराए। शिरीष के फूल भी इतने कठोर होते हैं कि जब तक नए फल उन्हें धक्का न दे, वे अपना स्थान नहीं छोड़ते।

iii) पहलवान की ढोलक मृतप्राय गाँववासियों की नसों में सनसनी फैला देती थी जिसके कारण उन्हें मृत्यु से भय नहीं लगता था। पहलवान की ढोलकर रात के सन्नाटे को मिटाकर उन्हें जीवन का अहसास कराती थी। ढोल के कारण महामारी से पीड़ित, अर्धमृत और लक्ष्यविहिन लोगों में उत्साह आता था। अतः यह ढोलक रात की भयंकरता को ललकार के लोगों में संजीवनी शक्ति भरती थी।

Space for writing Question Number

12.

i) यशोधर बाबू को एक सहज पारिवारिक जीवन की तलाश रहती हैं जिसमें वे आत्मथीता से रह सके। इसके लिए वे केवल अपने परिवारजनों को ही नहीं, बल्कि अपने रिश्तेदारों का भी सम्मलित करना चाहते हैं। उन्हें गरीब रिश्तेदारों के साथ संबंध जोड़ने में सुखद अनुभूति प्राप्त होती हैं। वे चाहते हैं कि उनके बच्चे उन्हें अपना बड़ा-बुजुर्ग माने, उनका सम्मान करे, उनसे सलाह ले और अपनी कमाई उनके हाथों में लाकर दे। स्वं वे अपने बच्चों से भी यही अपेक्षा करते हैं कि वे गरीब रिश्तेदारों का सम्मान करे, अपने पूर्वजों, पारिवारिकता, परम्पराओं को तिलांजलि न दे।

किंतु इसके विपरीत उनके बच्चे और पत्नी उन्हें उनकी सादगी के कारण झिड़की लगाते हैं और गरीब रिश्तेदारों की उपेक्षा करते हैं। यशोधर बाबू को यह सब देखकर बड़ा दुख होता हैं और मन-ही-मन वे, विशनदा से मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहते हैं। अतः इस तरह यशोधर बाबू एक आत्मीय परिवार के मुख्य के रूप में जीवन जीना चाहते हैं।

20

Space for writing Question Number

ii) एक अध्यापक का छात्र के जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। इसी कारण अध्यापक को तो ईश्वर से भी ऊँचा स्थान दिया गया है। अध्यापक निश्चित तौर पर अपने छात्रों का आदर्श-स्वरूप हो सकता है।

सौंदलगेकर नामक मास्टर मराठी को बड़े आनन्द के साथ पढ़ाते हैं। उन्हें लय, गति, छंद आदि का अच्छा ज्ञान था और वे कक्षा में कविता पढ़ाने के साथ-साथ उसका अभिनय भी करते। उन्हें नई और पुरानी मराठी कविताओं के साथ-साथ अनेक अंग्रेजी कविताएँ भी याद थी। पढ़ाते समय वे अनेक कवियों से हुई अपनी भेंट के संस्मरण सुनाते थे। वे स्वयं भी काव्य रचना करते थे। एक बार उन्होंने अपने दरवाजे पर छाई हुई मालती की बेल पर कविता लिखी, तो लेखक आनंद यादव को लगा कि उसके आसपास, गाँवो में, खेतों में, ऐसे कई दृश्य है जिनपर वह कविता लिख सकता है।

मास्टर से प्रेरित होकर आनंद ने भी कविता लिखनी शुरू की तो उन्होंने उसे शाबादी दी और कविता की भाषा, लय, अलंकार, छंद पर अपना सूक्ष्म दृष्टिकोण

Space for writing Question Number

व्यक्त करते। सौंदलगेकर मास्टर लेखक की कविता लेखन में रूचि देखकर उसे अलग-अलग प्रकार के काव्य-संग्रहों की पुस्तके देते।
इस प्रकार मास्टर ने आनंद को हर तरह से प्रोत्साहित कर उसे काव्य सृजन में आगे बढ़ाया। सौंदलगेकर मास्टर लेखक के लिए एक आदर्श-स्वरूप थे।

22

Space for writing
Question Number

Space for writing
Question Number

Space for writing
Question Number

24

Space for writing
Question Number

Space for writing
Question Number

26

Space for writing
Question Number

Space for writing
Question Number

28

Space for writing
Question Number

Space for writing
Question Number

30

Space for writing
Question Number

Space for writing
Question Number

32

Space for writing
Question Number

2026